भारतीय विदेश नीति

⇓

राष्ट्र का व्यवहार

↓

राष्ट्रीय हितों की पूर्ति ← सामरिक हित
राजनीतिक हित
आर्थिक हित

विदेश नीति राष्ट्र की आन्तरिक आवश्यकताओं का वाह्य प्रक्षेपण है।

विदेश नीति को प्रभावित करने वाले कारक -

1. भौगोलिक कारक
2. इतिहास

विदेश नीति को निर्धारित करने वाले कारक -

विदेश नीति का निर्धारण ऐतिहासिक, सामाजिक परिस्थितियां घरेलू परिस्थितियों एवं सार्वभौमिक विश्व व्यवस्था द्वारा निर्धारित होती है। ऐतिहासिक कारकों में भारतीय ऐतिहासिक विरासत एवं संस्कृति में सदैव शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति पर बल दिया गया। सम्राट अशोक की नीतियों ने, बौद्ध दर्शन में इसे स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है, मुगल काल में अकबर की नीतियाँ भी शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व से प्रेरित थी इसी ऐतिहासिक विरासत को महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में आगे बढ़ाया और उन्होंने साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद के विरुद्ध शान्तिपूर्ण संघर्ष किया इसी लिए भारतीय विदेश नीति में पंचशील

Scanned with CamScanner

शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व, उपनिवेशवाद-साम्राज्यवाद का विरोध, रंगभेद नीति को समाप्त करने जैसे मुख्य आदर्श अपनाये गये।

— भारत ने अन्य एशियाई अफ्रीकी देशों के स्वतन्त्रता आन्दोलन का समर्थन किया क्योंकि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आन्दोलन नहीं अपितु उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद के विरुद्ध आन्दोलन था और इस उपनिवेशवाद साम्राज्यवाद की समाप्ति के लिए तथा एशियाई अफ्रीकी राष्ट्रों में एकता के निर्माण के लिए एशियाई सम्बन्धों का सम्मेलन (1947), बांडुंग सम्मेलन (1955) में भारत की भूमिका उल्लेखनीय थी। भारतीय विदेश नीति में शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व अपनाते हुए UNO में हुए आस्था व्यक्त की गयी तथा निरस्त्रीकरण एवं गुट निरपेक्षता का आरम्भ से ही समर्थन किया गया और राष्ट्रीय आन्दोलन के द्वारा परमाणु हथियारों के विध्वंसक प्रयोग की कड़ी निन्दा हुई।

✓ विदेश नीति को प्रभावित करने वाले कारकों में विश्व व्यवस्था भी महत्वपूर्ण है और जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो तत्कालीन समय में साम्यवाद बनाम पूँजीवाद के मध्य शीत युद्ध का वैचारिक संघर्ष जारी था और विश्व में हथियारों की दौड़ और अनेक भागों में संघर्ष विद्यमान थे और भारत ने इन संघर्षों और सैन्य गुटों से

Scanned with CamScanner

अलग रहते हुए गुटनिरपेक्ष विदेश नीति को स्वीकार किया और गुटनिरपेक्ष विदेश नीति पूर्णतः स्वतन्त्र एवं स्वायत्त विदेश नीति का पर्याय है।

✓ वस्तुतः विदेश नीति का निर्धारण राष्ट्र की घरेलू आवश्यकता के द्वारा होता है इसीलिए विदेश नीति को घरेलू आवश्यकताओं का बाह्य प्रक्षेपण कहा जाता है और स्वतन्त्रता के पश्चात भारत में भारत की विदेश नीति का मूल उद्देश्य राष्ट्र की एकता, अखण्डता कायम रखना और भारत का औद्योगिक विकास करना था जिससे भारत में सामाजिक न्याय की स्थापना हो सके और इस औद्योगिक विकास के लिए विशाल मात्रा में पूँजी की आवश्यकता थी इसलिए भारत ने गुटनिरपेक्ष विदेश नीति को स्वीकार किया और दोनों महाशक्तियों से आर्थिक सहायता लेने का प्रयास किया.

✓ भौगोलिक कारक विदेश नीति को महत्वपूर्ण रूप में निर्धारित करते हैं और भौगोलिक कारकों में राष्ट्र की भौगोलिक स्थिति और आकार दोनों सम्मिलित होते हैं और भारत के विशाल आकार के कारण इसमें एक महाशक्ति बनने की क्षमता सदैव विद्यमान थी लेकिन विशाल आकार के कारण सुरक्षा की चुनौती भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है और भारत की भौगोलिक स्थिति जिस दक्षिण एशियाई क्षेत्र में है उसमें पड़ोसी राष्ट्र अत्यधिक अस्थिर, गैर-लोकतान्त्रिक और संघर्षरत हैं जिसका भारतीय

Scanned with CamScanner

विदेश नीति पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है. नेहरू के शब्दों में भारत की अवस्थिति एशिया में केन्द्रीय है इसलिए हिन्द महासागर, द० पूर्व एशिया, पश्चिम एशिया, मध्य एशिया में यदि कुछ भी घटना होती है तो इसका भारत पर प्रभाव पड़ता है. के० सुब्रमण्यम के अनुसार भारत जैसे विशाल आकार का देश किसी का पिछलग्गू नहीं हो सकता इसी लिए भारत ने किसी महाशक्ति का पिछलग्गू बनने की बजाए सदैव स्वतन्त्र और स्वायत्त विदेश नीति का पालन किया।

आर्थिक कूटनय —

(A) आर्थिक विकास दर बनाये रखना
(B) क्षेत्रीय मुक्त व्यापार क्षेत्र (SAARC)
(C) ASEAN, E.U. मर्कोसुर, A.U. के साथ सम्बन्ध
(D) USA, चीन, जापान के साथ आर्थिक सम्बन्ध
(E) ऊर्जा सुरक्षा – प० एशिया, मध्य एशिया, लैटिन अमरीका, अफ्रीका
(F) WTO के मंच पर विकासशील देशों की एकता.

सुरक्षा चुनौतियाँ —

(A) एकता, अखण्डता को बनाये रखना,
(B) सीमा पार आतंकवाद
(C) भारत-नेपाल सीमा पर बढ़ती ISI की गतिविधियाँ
(D) लिट्टे की गतिविधियाँ
(E) भारत-चीन सम्बन्धों को सामान्य करना
(F) हिन्द महासागर : मलक्का जल सन्धि की सुरक्षा

Scanned with CamScanner

(ल) स्वास्थ्य सुरक्षा, गरीबी
(म) पर्यावरण सुरक्षा
(ञ) सुरक्षा के वैश्विक खतरे (ड्रग्स, नशीली दवाओं का व्यापार)

विदेश नीति में स्थायित्व और परिवर्तन – राष्ट्रीय हितों की पूर्ति

1. साम्राज्यवाद का विरोध
2. उपनिवेशवाद का विरोध
3. रंगभेद नीति का विरोध
4. UNO में आस्था
5. गुट निरपेक्षता (पंचशील)
6. पड़ोसी देशों के साथ बेहतर सम्बन्ध

1. UNO में आस्था
2. निरस्त्रीकरण
3. पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध
4. तनाव शैथिल्य एवं शान्ति
5. गुटनिरपेक्षता
6. यथार्थवादी
7. पहलकारी
8. भू-अर्थ प्रधान
9. महाशक्ति के रूप में उभरना।

भारतीय विदेश नीति की विशेषताएँ एवं चुनौतियाँ

द्वितीय युद्धोत्तर विश्व में आर्थिक उदारीकरण और निजीकरण की विचार रणनीति का प्रयोग भारत में किया गया और भारतीय अर्थव्यवस्था इस समय विश्व की दूसरी सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था है, 50 वर्षों में लोकतन्त्र का स्थायी होना, परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र के रूप में उभरने से, भारतीय विदेश नीति की प्राथमिकताओं में परिवर्तन हुआ है एवं नई चुनौतियाँ भारत के समक्ष उपस्थित हैं इस भूमण्डलीकृत जटिल अन्तर्निर्भरता के युग में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति नॉन जीरो सम गेम के आधार पर संचालित है, इस परिवर्तित सन्दर्भ में भारतीय विदेश नीति में भी परिवर्तन हुआ है, भारतीय विदेश नीति का मूल आधार पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण,

Scanned with CamScanner

एवं शान्तिपूर्ण सम्बन्ध रहा है, पड़ोसी देशों में स्थायित्व एवं शान्ति भारत के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है, बांग्लादेश का स्थायी लोकतान्त्रिक होना, तालिबानीकरण की बढ़ती प्रवृतियों को नियन्त्रित किया जाना, भारत के राष्ट्रीय हित में है क्योंकि सम्प्रति भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा को सबसे बड़ा खतरा बांग्लादेश में चलाये जा रहे आतंकवादी प्रशिक्षण अड्डों से है, पाकिस्तान का एक मध्यमार्गी होना तथा लोकतन्त्र का प्रसार भारतीय राष्ट्रीय हित में है, पाकिस्तान-अफगानिस्तान सीमा पर तालिबानियों का पुनः उदय भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है और भारत अफगानिस्तान में लोकतन्त्र को स्थायी बनाने के लिए विकास कार्यों में संलग्न है, भारतीय विदेश नीति में सदैव लोकतन्त्र एवं पंथनिरपेक्षता का समर्थन किया गया है लेकिन भारत की यह स्पष्ट नीति है कि वह अन्य देशों के लिए लोकतन्त्र बाहर से थोपने का समर्थक नहीं है अतः लोकतन्त्र के निर्यात की संकल्पना भारतीय विदेश नीति का भाग नहीं है, भारतीय विदेश नीति का मूल उद्देश्य दक्षिण एशिया को मुक्त व्यापार क्षेत्र के रूप में विकसित करना है, भारत के द्वारा पड़ोसी देशों को यह समझाने का प्रयास किया जाता है कि भारत एक अवसर है खतरा नहीं, भारत-श्रीलंका के मध्य मुक्त व्यापार समझौता इसका स्पष्ट प्रमाण है, भारत ने पड़ोसी देशों को (नेपाल,

Scanned with CamScanner

भूटान, मालदीव) व्यापार में एकतरफा छूट प्रदान की है भारतीय विदेश नीति में पंथनिरपेक्ष लोकतान्त्रिक नेपाल, श्रीलंका की एकता व अखण्डता का सदैव समर्थन किया जाता है. विदेश नीति के अनुसार तमिल समस्या का समाधान श्रीलंकाई संविधान के अन्तर्गत स्वायत्तता प्रदान करके किया जा सकता है.

भारतीय विदेश नीति में आतंकवाद और सीमापार आतंकवाद को किसी भी रूप में सहन नहीं किया जाता अतः भारत की नीति आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेन्स की है शीतयुद्धोत्तर विश्व में पहली बार सभी महाशक्तियों के मध्य जटिल अन्तर्निर्भरता के सम्बन्ध निर्मित हो चुके हैं, इस अर्थ प्रधान विश्व राजनीति में भारत और अमरीका के मध्य सम्बन्धों में अपूर्व सुधार हुआ है, दोनों के मध्य सामरिक सम्बन्धों की स्थापना हो चुकी है, द्विपक्षीय व्यापार सैन्य सहयोग तथा ऊर्जा क्षेत्र में भी दोनों के मध्य सहयोग हो रहा है, दोनों राष्ट्र दुनिया के सबसे बड़े लोकतान्त्रिक राष्ट्र है लेकिन शीत युद्ध में भारत-अमरीका के सम्बन्धों में सदैव उतार-चढ़ाव बना रहा लेकिन आज भारत-अमरीकी सम्बन्ध सर्वाधिक बेहतर स्थिति में हैं

1990 के पश्चात भारतीय विदेश नीति में यथार्थवाद प्रभावी हुआ और भारत-चीन सम्बन्धों को अनुकूल बनाने का प्रयास किया गया, सीमा विवाद को सुलझाने

Scanned with CamScanner

के लिए विशेष प्रतिनिधियों को नियुक्त हुई है लेकिन व्यापारिक सहयोग में निरन्तर वृद्धि हो रही है और आज चीन भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय व्यापारिक साझेदार बन गया है। दक्षेस में चीन का पर्यवेक्षक राष्ट्र के रूप में सम्मिलित होना तथा भारत का शंघाई सहयोग परिषद में पर्यवेक्षक राष्ट्र का दर्जा दोनों के मध्य क्षेत्रीय सहयोग में भी वृद्धि हो रही है इसलिए भारत-चीन सम्बन्धों को आज 1962 के दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता बल्कि आज भारत व चीन मिलकर आर्थिक विकास और प्रगति में साझेदार हैं।

भारतीय विदेश नीति में रूस के साथ सदाबहार मित्रता-पूर्ण सम्बन्धों को बनाये रखा गया है क्योंकि रूस अभी भी भारत को रक्षा सामग्री की आपूर्ति करने वाला सबसे बड़ा देश है। रूस के साथ सम्बन्धों को बढ़ाकर ऊर्जा सुरक्षा के सन्दर्भ में सहयोग किया जा रहा है। रूस ने परमाणु मुद्दे पर, कश्मीर मुद्दे पर तथा सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का सदैव समर्थन किया है।

भूमण्डलीकरण के इस युग में EU सबसे बड़े बाजार के रूप में उभरा है और EU वर्तमान समय में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है और इस समय भारत और यूनियन के मध्य शिखर वार्ता का आयोजन प्रति वर्ष होता है। दोनों के मध्य सामरिक

Scanned with CamScanner

सम्बन्ध भी स्थापित हो चुके है । 1990 के पश्चात भारत द्वारा अपनायी गयी उदारीकरण व निजीकरण की नीतियों के परिणामस्वरूप भारत-जापान सम्बन्धों को नया आधार प्रदान हुआ है । जापान - भारत की आधारभूत संरचना के विकास में सहयोग करने वाला अग्रणी राष्ट्र है ।

1990 के पश्चात भारतीय विदेश नीति पहलकारी (प्रोएक्टिव), यथार्थवादी और भू अर्थ प्रधान हो गयी है इस लिए प्रत्येक देशों और क्षेत्रों के साथ सम्बन्धों को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जा रहा है । 1991 में नरसिम्हा राव सरकार ने पूर्व की ओर देखो विदेश नीति का आरम्भ किया जिसके अन्तर्गत दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों के साथ सम्बन्ध निर्माण पर केन्द्रीय महत्व प्रदान किया गया. दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों के साथ द. कोरिया, जापान, ऑस्ट्रेलिया के साथ सम्बन्धों को सुदृढ़ किया गया है क्योंकि एशिया प्रशान्त का यह क्षेत्र आर्थिक विकास और सम्पन्नता का क्षेत्र है और भारत का सदैव इस क्षेत्र के साथ जटिल सांस्कृतिक ऐतिहासिक सम्बन्ध रहे हैं । पूर्व की ओर देखो की विदेश नीति का मूल आधार निम्नलिखित है -

1. व्यापार, निवेश में वृद्धि
2. भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों को विकास की मुख्य धारा में जोड़ना ।
3. उत्तरी पूर्वी राज्यों में आतंकवादी समस्याओं के समाधान के लिए म्यांमार जैसे राष्ट्रों के सहयोग

Scanned with CamScanner

-लना,
4. इस क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति को प्रति सन्तुलित करना
5. दक्षिणी पूर्वी एशियाई देश भी वर्तमान समय में भारत के साथ सम्बन्ध निर्माण पर प्राथमिकता प्रदान कर रहे हैं

आसियान के साथ सम्बन्ध समग्र रूप में विद्यमान है इसके अलावा बिमसटेक और गंगा मेकांग परियोजना जैसे उप-क्षेत्रीय सहयोग भी हैं, विशेषकर म्यांमार के साथ सम्बन्धों की पुनर्बहाली करना भारत की विदेश नीति में यथार्थवाद का स्पष्ट प्रमाण है क्योंकि म्यांमार की सीमा उत्तरी पूर्वी राज्यों से सटी है और इसी लिए म्यांमार में लोकतन्त्र का मुद्दा म्यांमार का आन्तरिक मामला है यह विदेश नीति का मानना है लेकिन भारत आंग सान सू ची को अभी भी नैतिक समर्थन प्रदान कर रहा है लेकिन म्यांमार के सैनिक सरकार के साथ भी भारत के सम्बन्ध मधुर हैं.

भारतीय विदेश नीति में पश्चिम एशिया का महत्व निम्न लिखित कारणों से निर्विवाद रूप में है -

1. भारत तेल आयात करने वाला दुनिया का छठा सबसे बड़ा राष्ट्र है और भारत की इस ऊर्जा सुरक्षा की आपूर्ति का लगभग 70% भाग पश्चिम एशिया से आता है.
2. पश्चिम एशिया में 30 से 40 लाख भारतीय मूल के लोग कार्यरत हैं.
3. इस्लामिक संगठन की नीतियों को अप्रभावी करने

Scanned with CamScanner

के लिए भी इस क्षेत्र का महत्व निर्विवाद है।

भारत के इस क्षेत्र में विदेश नीति में सबसे बड़ा परिवर्तन 1992 में आया जब भारत ने इजरायल के साथ सम्बन्धों को मान्यता प्रदान की तथा कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किए और यह यथार्थवादी एवं पहलकारी विदेश नीति का उदाहरण है इसी के साथ भारत ने सऊदी अरोबेया के साथ सम्बन्धों को नई ऊँचाई प्रदान की है ईरान के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध कायम है और सबसे महत्वपूर्ण रूप में भारत अभी भी फिलीस्तीनी मुद्दे पर परम्परागत समर्थन दे रहा है जबकि 1990 के पहले भारत ने इजरायल के साथ कूटनयिक सम्बन्धों का निर्माण नहीं किया क्योंकि भारत फिलीस्तीन समर्थक राष्ट्र था।

भारतीय विदेश नीति में अफ्रीका के साथ परम्परागत सम्बन्धों को आर्थिक आधार प्रदान किया गया है और वाणिज्य मन्त्रालय ने अफ्रीका के साथ सम्बन्धों को अत्यधिक महत्वपूर्ण बताया अतः भारतीय विदेश नीति में यह भू अर्थ के प्रभावी होने का प्रमाण है क्योंकि अफ्रीका के साथ अब व्यापार निवेश आधारभूत संरचना के विकास पर बल दिया जा रहा है। भारतीय विदेश नीति की पहलकारी विशेषता को लैटिन अमरीका के साथ सम्बन्धों में देखा जा सकता है क्योंकि लैटिन अमरीकी क्षेत्र भारतीय विदेश नीति के लिए अभी तक उपेक्षित था लेकिन 1996 के

Scanned with CamScanner

पश्चात इस क्षेत्र के साथ व्यापारिक सम्बन्धों में अभूतपूर्व बृद्धि हुई है। भारतीय विदेश नीति में तीसरी दुनिया के साथ सम्बन्धों को मधुर करने पर सदैव बल दिया गया और आज जब भारत महाशक्ति के रूप में उभर रहा है तो लैटिन अमरीका और अफ्रीका के साथ सम्बन्धों को सुदृढ़ करने पर ज्यादा बल दिया जा रहा है क्योंकि भारतीय विदेश नीति में विकासशील देशों की एकता पर सदैव बल दिया गया। शीत युद्ध के युग में इसी विकासशील देशों की एकता के द्वारा उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद, रंगभेद नीति के विरुद्ध सामूहिक संघर्ष किया गया।

भारतीय विदेश नीति में आरम्भ से ही निरस्त्रीकरण का समर्थन किया गया लेकिन परिवर्तित क्षेत्रीय और वैश्विक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप 1998 में भारत ने परमाणु बम का विस्फोट किया और यह भारतीय विदेश नीति में एक बड़ा परिवर्तन था क्योंकि सुरक्षा को बनाये रखने के लिए निरस्त्रीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति जैसे आदर्शात्मक सिद्धान्तों को द्वितीयक माना गया लेकिन यह बिन्दु अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि भारत ने परमाणु बम के निर्माण के पश्चात भी सार्वभौमिक, समग्र निरस्त्रीकरण का समर्थन किया है लेकिन विश्व के शक्तिशाली राष्ट्र सार्वभौमिक निरस्त्रीकरण की बजाय परमाणु हथियारों का नियन्त्रण कुछ महाशक्तियों के हाथ में देना चाहते हैं और

Scanned with CamScanner

कुछ विश्व को सदैव के लिए परमाणु हथियारों से वंचित करने का प्रयत्न करते है इसीलिए भारत ने सदैव अप्रसार के विभेदकारी प्रावधानों का विरोध किया.

भारतीय विदेश नीति द्वारा शुरू से ही UNO को शक्तिशाली बनाने का समर्थन किया गया. बहुपक्षवाद को बढ़ने का प्रयास किया गया जिससे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय संघर्षों का समाधान शान्तिपूर्ण रूप में सम्भव हो सके और वर्तमान समय में भारत ने UNO के लोकतान्त्रिकरण की मांग उठायी है और सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता का दावा भी प्रस्तुत किया है क्योंकि UNO का लोकतान्त्रिकरण एवं भारत की सदस्यता एक-दूसरे के पूरक है.

समकालीन युग में मानवता के समक्ष सुरक्षा के नये संकट उत्पन्न हुए है जो परम्परागत सुरक्षा के खतरों से बिल्कुल अलग है वैश्विक आतंकवाद, नशीली दवाओं का व्यापार, मौसम परिवर्तन, एड्स जैसी समस्याओं से पूरा विश्व प्रभावित है ये किसी भी राष्ट्र राज्य में सीमित नहीं है इसलिए इन समस्याओं का समाधान साझा हो सकता है इसलिए भारतीय विदेश नीति में UNO को शक्तिशाली बनाने पर बल दिया जाता है. इस भूमण्डलीकरण के युग में WTO, सम्पूर्ण विश्व में व्यापारिक गतिविधियों को नियन्त्रित करने की वैश्विक संस्था है लेकिन विकसित राष्ट्र WTO का प्रयोग अपने हितों की पूर्ति करने के प्रयास करते है और विकासशील देशों के व्यापार को

Scanned with CamScanner